International Journal of Scientific Research in Science and Technology
© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 11 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X

महात्मा गाँधी के पूर्वगामी के रूप में लोकमान्य तिलक का मूल्यांकनः एक संक्षिप्त विश्लेषण

राजेश कुमार रौशन
शोधार्थी इतिहास विभाग, बी०आर०ए०बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर

राजनीतिक नेतृत्व और स्वतंत्रता संग्राम को लेकर तिलक और महात्मा गांधी की तुलना रोचक है । लोकमान्य तिलक और महात्मा गांधी दोनों ही अपने युग के सर्वश्रेष्ठ राष्ट्रवादी विभूतियाँ थी । दोनों ही नेताओं के व्यक्तित्व स्वतंत्रता संग्राम के जीवंत प्रतीक थे । जिस तरह प्रथम महायुद्ध के पश्चात भारत के राजनीतिक रंगमंच पर गांधी जी का एकछत्र अधिपत्य रहा, उसी तरह महायुद्ध के पहले लोकमान्य तिलक भारतीय जनमानस के सम्राट थे।[1] राजनीतिक में तिलक एक जन्मजात योद्धा थे । उनके आदर्श श्रीकृष्ण, कौटिल्य, शिवाजी और पेशवा थे । उनकी जैसे को तैसे में आस्था थी ।

तो दूसरी ओर महात्मा हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी मानव नहीं महामानव थे । महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन ने गांधी जी के बारे में कहा था कि भविष्य की पीढ़ियों को इस बात पर विश्वास करने में मुश्किल होगी कि हाड़–मांस से बना ऐसा कोई व्यक्ति भी कभी धरती पर आया था।[2] आइंस्टीन ने गांधी जी के बारे में जो बात कही वो अपने आप में बड़ी बात थी । इन दोनों राष्ट्रीय नेताओं का हमारा देश ऋणी है।

सबअल्टर्न इतिहासकार पार्थ चटर्जी, ज्ञानेन्द्र पांडे, रंजीत गुहा इत्यादि को पढ़े तो उसके अनुसार क्रांति या परिर्वतन का कारण नेता नहीं बल्कि जनता होती है । जनता ही क्रांति का आधार तैयार करती है वहीं क्रांति की पृष्ठभूमि तथा प्रवाह होती है और जनता ही नेतृत्व की तैयारी करती है और यही नेतृत्व एक दिन इतिहास का निर्माण करती है ।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास ऐसे ही जनांदोलन का प्रतीक है। यह जनांदोलन दो व्यक्तियों–लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक और महात्मा गांधी का ऋणी है ।

कहा जाता है कि भारतीय मुक्ति संग्राम ने आधुनिकता की छवि तब धारण किया जब 1885 ई० में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का गठन हुआ । कांग्रेस के गठन के समय इस में भाग लेनेवाले सदस्यों की संख्या कम थी, परंतु जैसे–जैसे संगठन विकसित होता गया इसके सदस्यों की संख्या भी बढ़ती गई ।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने जन मन को एक नया मंच प्रदान किया जिसका वार्षिक अधिवेशनों में जनाकांक्षाओं का प्रकटीकरण होता रहा । प्रारंभ में इसका स्वरूप उदार था क्योंकि तब लोगों को अंग्रेजी हुकूमत की न्यायप्रियता पर विश्वास था । परंतु धीरे–धीरे यह स्पष्ट हो गया कि अंग्रेजी साम्राज्य अपनी जड़े और पकड़ भारत में किसी भी कीमत पर कमजोर करना नहीं चाहती है । इस वजह से उभरे अंसतोष ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को एक नई दिशा में मोड़ दिया, जिसका अध्ययन कांग्रेस के गरम दल के नेतृत्व के रूप में किया जाता है ।

1856 ई० में तिलक का जन्म हुआ और 1920 ई० वे उनकी आत्मा परमात्मा में विलीन हो गई । इस काल की राजनीतिक घटनाओं को हम देखे तो उसपर तिलक का सर्वाधिक प्रभाव दिखाई देता है । यह ठीक है कि अन्य राष्ट्रवादी नेताओं ने भी स्वतंत्रता आंदोलन की महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में भूमिका निभाई, किन्तु महात्मा गांधी के शब्दों में–**'कोई भी व्यक्ति जन–मन पर इस प्रकार का अधिकार नहीं जमाया, जिस प्रकार तिलक ने।'**[3]

2 अक्टूबर 1869 ई० को पोरबंदर अथवा सुदामापुरी[4] में महात्मा गाँधी का जन्म हुआ और 1948 ई0 में उनकी मृत्यु हुई । महात्मा गांधी का राजनीतिक कार्यकाल कुछ समय तक तिलक के साथ और फिर स्वतंत्र रूप से 1920 से प्रारंभ होकर स्वतंत्रता प्राप्ति तक चलता रहा । भारतीय जनमानस पर उनका सर्वाधिक प्रभाव बना रहा । ये बातें बहुत कुछ तिलक जैसी थी । इस कारण तिलक युग की समाप्ति के बाद गांधी युग का आगमन स्वाभाविक दिखता है । दोनों ने ही देश की जनता को स्वराज्य का पाठ पढ़ाया। उसे प्रबुद्ध किया और उसमें राष्ट्र की इच्छा को पहचानने की क्षमता और चेतना उत्पन्न की । तिलक के आलोचक ने उन्हे **'भारतीय अशांति के जनक'** कहा तथा अंगरेजों ने महात्मा गांधी को **'ब्रिटिश साम्राज्यवाद का सर्वाधिक खतरनाक दुश्मन'** कहा । दोनों ने ही अन्याय और पराधीनता के विरूद्ध स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया और भारत की गुलामी का विरोध किया । तिलक और गांधी दोनों के विचारों में कतिपय भिन्नताएँ देखी जा सकती है । किन्तु दोनों का

उद्देश्य समान था । तिलक का गांधी के प्रति गहरा सम्मान भाव था तो दूसरी ओर गांधी निरंतर तिलक से प्रेरणा और प्रोत्साहन प्राप्त करते रहे ।

इन दोनों के कार्यकाल में भारतीय जनता गुलामी की जंजीर में जकड़ी हुई थी । यह एक काला युग था जिसमें विदेशी शासन से जनता त्रस्त थी । क्षोभ और अपमान की इसी पृष्ठभूमि में सर्वप्रथम लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक जैसे विद्वान और जुझारू नेतृत्व का उद्भव हुआ । तिलक ने भारत के राष्ट्रीय मुद्दों और समस्याओं को समाज के मुठ्ठी भर विद्वत समाज के कॉफी हाउस टॉकिंग या बुद्धि विलास से उपर लोकप्रिय जनआंदोलन का हिस्सा बना दिया ।

महात्मा गांधी ने भारत के लिए जो सत्य और अहिंसा के हथियार का प्रयोग किया अथवा चरखा तथा अन्य रचनात्मक कार्य को प्रारंभ किया वह व्यक्तिगत न होकर पूरे भारत का हो गया । अब उनके आंदोलन में चंपारण सत्याग्रह से भारत छोड़ों आंदोलन तक आवाम उनसे जुड़ती रही और आंदोलन लोकप्रिय हुए और उन्हें सपफलता भी मिली ।

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के इतिहास में लोकमान्य तिलक कई कारणों से गांधी के पूर्ववर्ती माने जाते है । वे उदारवादी कांग्रेसी राजनीति से आगे बढ़े और आंदोलन को बंद कमरों और ज्ञापन तथा प्रार्थनापत्र से निकालकर जनप्रदर्शन के माध्यम से अधिक से अधिक जनता के भागीदारी के रूप में स्थापित किया । जनता को नेतृत्व देने के क्रम में ही उनका उपनाम 'लोकमान्य' रखा गया । इस प्रकार बाल गंगाधर तिलक जनता को स्वतंत्रता आंदोलन से जोड़ने के मामले में गांधी के पूर्ववर्ती थे ।

बालगंगाधर तिलक ने सर्वप्रथम राष्ट्रीय आंदोलन को **'स्वराज्य' का** लक्ष्य दिया । उन्होंने अपने नारे में कहा कि–'स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और हम इसे लेकर रहेंगे।' स्वराज्य से उनका अभिप्राय स्वशासन था । वे चाहते थे कि शासन की समस्त बागडोर भारतीयों के हाथ में हो ।

हिन्दू–मुस्लिम एकता के संदर्भ में भी तिलक गांधी के पूर्ववर्ती थे । गांधी जी ने सभी धर्मो को साथ लेकर चलने के आग्रही थे । उन्हे जैसे ही मौका मिला खिलाफत के प्रश्न पर हिन्दू और मुसलमानों के लिए एक मुस्लिम लीग के साथ हुए कांग्रेसी के लखनऊ समझौते को तिलक का नैतिक समर्थन प्राप्त था ।

यद्यपि शिवाजी उत्सव और गणेश चतुर्थी के माध्यम से जनता को राष्ट्र के प्रति कर्त्तव्यों के लिए उत्साहित करने हेतु बाल गंगाधर तिलक ने इन उत्सवों को चलाया । इस वजह से इन पर किसी एक संप्रदाय के प्रति झुकाव का आरोप लगाया जाता है । इसके वावजूद तिलक की दृष्टि सर्वव्यापक थी और वे भारत में निवास करनेवाले प्रत्येक व्यक्ति का भेदभाव से उपर उठकर कल्याण करना चाहते थे ।

इसी प्रकार स्वदेशी वस्तु और स्वदेशी शिक्षा के प्रति तिलक का समर्पण उन्हें गांधी का पूर्ववर्ती साबित करता है । अन्याय न सहने और अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता का पाठ भी बाल गंगाध्र तिलक ने दिया । इसी वजह से क्रांतिकारी आंदोलन के समर्थन के रूप में तिलक का महत्व है । वेलेन्टाइन शिरोल ने उन्हे **'भारतीय अशांति का जनक'** की संज्ञा दी ।

गांधी की तरह तिलक मूलतः जनता को आंदोलन से जोड़ना चाहते थे । इसके लिए असहयोग आंदोलन के दौरान महात्मा गांधी ने कांग्रेस की सदस्यता बढ़ानी चाही तो कांग्रेस की सदस्यता शुल्क जमा करने के लिए निर्मित फंड का नाम 'तिलक स्वराज्य फंड' रखा गया । आम सेवा बिल के नाम पर भी गांधी और तिलक के बीच एक ही प्रकार का संबंध था । गांधी ने भी आंदोलन के प्रारंभ में स्वशासन का लक्ष्य बनाया था जिसे वामपंथियों और कांग्रेस के युवा नेताओं के दबाब पर 1930 ई0 में पूर्ण स्वराज्य में परिवर्तित हुआ ।

राजनीतिक नेतृत्व और स्वतंत्राता संग्राम की दृष्टि से तिलक और महात्मा गांधी की तुलना रोचक है। लोकमान्य तिलक और महात्मा गांधी दोनों ही अपने युग की सर्वश्रेष्ठ राष्ट्रवादी विभूतियाँ थी । दोनों ही नेताओं के व्यक्तित्व अपने–अपने काल में स्वतंत्रता संग्राम के जीवंत प्रतीक थे । जिस तरह प्रथम महायुद्ध के पश्चात भारत के राजनीतिक रंगमंच पर गांधी जी का एकछत्र आधिपत्य रहा, उसी प्रकार प्रथम महायुद्ध के पहले लोकमान्य तिलक भारतीय जनमानस के सम्राट थे । राजनीत में तिलक जन्मजात योद्धा थे । उनके आदर्श थे– श्रीकृष्ण, कौटिल्य, शिवाजी और पेशवा । उनकी 'जैसा को तैसा' नीति में आस्था थी । वे साधुजनों को राजनीतिक के लिए अनुपयुक्त मानते थे । भारत में ब्रिटिश शासन के नकारात्मक पक्ष को उन्होंने अच्छी तरह से समझा था । उनका अंगरेजों की न्यायपरायणता में बिल्कुल ही विश्वास न था । वे कहा करते थे कि हमें स्वराज्य अंगरेजों से दान के रूप में नहीं मिल सकता । स्वराज्य प्राप्त करने के लिए हमें विदेशी शासकों से डटकर संघर्ष करना होगा ।

'तिलक राजनीति में साध्य और साधन के अभेद को स्वीकार नहीं करते थे । उनका मत था कि यदि हमारे साध्य श्रेष्ठ है तो हम उन्हे पाने के लिए जिस तरह से साधनों का चाहे प्रयोग कर सकते है । तिलक के क्रांतिकारियों से संबंध आवश्य थे, लेकिन वे भारत में सशस्त्र क्रांति की संभावना से इंकार करते थे। उनकी संवैधनिक साधनों में आस्था थी।[5]

गांधी जी की राजनीतिक विचारधारा और कार्यपद्धति तिलक से भिन्न थी । वे स्वभाव से राजनीतिज्ञ नहीं बल्कि धर्मिक पुरूष थे । उनक राजनीतिक नेतृत्व उस विशाल प्रसाद की भांति था जिसकी नींव धर्म पर टीकी थी । राजनीतिज्ञ आमतौर पर धर्म की गहराई में नहीं जाते । राजनीतिज्ञों का मुख्य उद्देश्य होता है– सत्ता का अर्जन और फिर उसका संरक्षण । सत्ता का अर्जन करने और उसे अपने हाथों से बनाए रखने के लिए राजनीतिज्ञों को प्रायः छल–कपट का आश्रय लेना पड़ता है । महात्मा गांधी इस नियम के अपवाद थे । उनके लिए संपूर्ण जीवन एक इकाई था । उनके चिंतन में धर्म, अर्थ, समाज, शिक्षा, राजनीति विश्वशांति सभी एक दूसरे से जुड़े हुए थे ।

राजनीतिक जीवन के प्रारंभिक काल में उत्तरदायी नेताओं की भांति गांधीजी का भी अंगरेजों की न्यायपरायणता में विश्वास था । बाद में वे ब्रिटिश सरकार के कटु आलोचक हो गए और भारत की अधिकांश बुराईयों की जड़ ब्रिटिश शासन को मानने लगे ।

गांधी जी साध्य और साधनों के बीच कोई विभाजक रेखा स्वीकार नहीं करते थे । उनका विश्वास था कि श्रेष्ठ साध्य की प्राप्ति के लिए श्रेष्ठ साधनों का प्रयोग करना चाहिए । गांधीजी और तिलक दोनों के हृदय में भारतीय संस्कृति के प्रति अगाध श्रद्धा थी । परंतु उनकी संस्कृति विषयक मान्यताओं में थोड़ी भिन्नता है । तिलक कट्टर हिन्दू थे । वे हिन्दू धर्म के नाम पर वे बालविवाह जैसी सामाजिक कुरीतियों को भी सहन करने के लिए तैयार थे । उनका हिन्दू धर्म आक्रामक हिन्दू धर्म था । गांधीजी के साथ यह बात नहीं थी । उनके धर्मिक विश्वासों में पुरातनपंथता अथवा अंधविश्वासों के लिए कोई जगह नहीं थी । उनका जीवन सर्वधर्म समन्वय का जीता जागता उदाहरण था ।

तिलक महान गणितज्ञ थे । उनका संख्याओं में विश्वास था । गांधी जी संख्या के उतने कायल नहीं थे । अगर वे किसी बात को ठीक समझते तो उसपर अकेले ही आचरण करने के लिए तैयार रहते थे। कतिपय आधरभूत मतभेदों के बावजूद तिलक और गांधीजी दोनों की भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महान सेनानी थे । दोनों ने ही अपने प्रचंड व्यक्तित्व से राष्ट्रीय आंदोलन को गति और दिशा दी। तिलक के राष्ट्रीय आंदोलन की मुख्य देन यह थी कि वे अपने साथ मध्यमवर्ग को राष्ट्रीय आंदोलन में खींच लाए । इस प्रकार उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन के क्षेत्र को पहले की अपेक्षा व्यापक बना दिया । गांधीजी ने तिलक के काम को और आगे बढ़ाया । उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन को केवल जनांदोलन ही नहीं बनाया बल्कि उसे क्रांतिकारी आंदोलन भी बना दिया । गांधीजी के नेतृत्व में राष्ट्रीय आंदोलन का संदेश देश के कोने–कोने में पहुँच गया।

इस प्रकार गांधी के पूर्व ही तिलक ने स्वदेशी–बहिष्कार और राष्ट्रीय शिक्षा जैसे कार्यक्रमों को देश के सामने रखा । तिलक का जन्म स्वाधीनता संग्राम के एक वर्ष पूर्व और गांधी की मृत्यु स्वाधीनता प्राप्ति के एक वर्ष के बाद हुई थी । अतः संपूर्ण स्वतंत्रता आंदोलन तिलक और गांधी की अवधि में समाहित हो जाता है। तिलक ने राजनीति को जनसाधारण की चीज बताया । जनता को एकता और अनुशासन का पाठ पढ़ाया। स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूँगा । यह उनका पथप्रर्दशक था । महात्मा गांधी अनवरत अंग्रेजों के विरूद्ध संघर्ष करते रहे । तिलक के नींव पर ही महात्मा गांधी ने स्वाधीनता का भव्य भवन निर्मित किया । तिलक 'भारतीय राष्ट्रवाद के जनक' और गांधी 'राष्ट्रपिता' कहलाये ।

इसी परिपेक्ष्य में प्रस्तुत शोध आलेख में तिलक और गांधी के विचारों की मूल धरा को स्पर्श करते हुए राजनीतिक दृष्टि से दोनों की समानता और गांधी जी के पूर्ववर्ती के रूप में तिलक का मूल्यांकन करना है ।

तिलक के कार्यकाल में भारतीय जनता गुलामी की जंजीरों में जकड़ी हुई थी । यह एक काला युग था, जिसमें विदेशी शासन से जनता त्रस्त थी । इसी काले युग में तिलक का जन्म महाराष्ट्र के रत्नागिरि नामक स्थान पर एक **'चितपावन ब्राह्मण[6] परिवार'** में हुआ था । उनके पिता गंगाधर पंत एक विद्यालय शिक्षक और संस्कृत के विद्वान थे । उनकी माता श्रीमती पार्वती वाई धर्मिकता और सरलता की मूर्ति थी । इनकी मृत्यु बालपन में ही हो जाने के कारण इनका पालन–पोषण इनकी चाची ने किया था । सन् 1866 ई० में इन्हे पूना नगर स्कूल में भर्ती कराया गया । इनकी स्मरणशक्ति बड़ी तीव्र थी । संस्कृत के सैकड़ों श्लोक उन्होंने कंठस्थ कर लिये थे । जैसा की उन दिनों परंपरा थी, अभी तिलक स्कूल में ही पढ़ रहे थे कि 1871 ई० में उनकी शादी कर दी गई।[7] ''जब वे 16 वर्ष के थे उसी समय उनके पूज्य पिता का निधन हो गया । जब उनकी दस वर्ष की ही अवस्था थी, उसी समय उनकी पूजनीया माता का देहांत हो गया । इस प्रकार जीवन की अल्पावस्था में ही उनको महान कष्ट का सामना करना पड़ा, किन्तु धैर्य, अनवरत अध्यवसाय और कष्ट सहिष्णुता की अत्यधिक मात्राा का विकास भी उनके चरित्र में इन प्रारंभिक आपदाओं के साथ संघर्ष करने में ही हुआ।[8]''

दक्कन कॉलेज पुणे से 20 वर्ष की अवस्था में बी०ए० और 23 वर्ष की अवस्था में कानून की परीक्षा उर्तीण की । तिलक भारतीय स्नातक के प्रथम बैच थे जिन्होंने कॉलेज शिक्षा प्राप्त की । ''कॉलेज में पढ़ते समय तिलक का हृदय देशभक्ति से भर चुका था । इनके जन्म के एक वर्ष के बाद ही सन् 1857 ई० का राष्ट्रीय संग्राम हुआ था । बाल्यकाल में देशभक्तों की वीरता और सरकार के भीषण दमन–चक्र के बारे में उन्होंने अवश्य ही सुना होगा । जब वे कॉलेज में पढ़ते थे उसी समय वासुदेव बलवंत फड़के का असफल सरकार विरोधी कांड हुआ । उनका भी प्रभाव उन पर पड़ा होगा । स्वयं तिलक इसी ऐतिहासिक चितपावन कुल में उत्पन्न हुए थे जिसने पेशवाओं को जन्म दिया था । आवश्य ही बालाजी विश्वनाथ और बाजीराव के कारनामे उनको सुनने और पढ़ने को मिले होंगे । सन् 1818 ई० में पेशवाई का अंत हुआ और रत्नागिरि तथा पूना निवासियों के मुख से मराठा इतिहास के गौरवपूर्ण अध्यायों का श्रवण कर विलक्षण उत्साह से तिलक का हृदय भर जाता होगा । इसलिए हम यह देखते है कि जीवन के उषाकाल में ही तिलक ने एक भीष्म–प्रतिज्ञा की । उन्होंने दृढ़ संकल्प लिया कि वे सरकारी नौकरी में प्रवृत्त नहीं होंगे।[9]

तिलक सक्रियता से जनसाधारण के मसलों में भाग लेते थे ।[10] ग्रेजुएशन के बाद तिलक गणित शिक्षक के रूप में पुणे के एक निजी स्कूल में अध्यापन कार्य करने लगे । सहकर्मी से वैचारिक मतभेद के कारण उन्होंने स्कूल की नौकरी छोड़ दी और पत्रकार बन गये ।

24 अक्टूबर 1884 ई० को उन्होंने अपने कुछ मित्रों के सहयोग से दक्कन एजुकेशन सोसाइटी की स्थापना की। इसमें गोपाल गणेश अगरकर, महादेव बाललाल नामजोशी और विष्णुशास्त्री चिपलूणकर प्रमुख थे । इस संस्था का उद्देश्य भारतीय युवाओं में शिक्षा के स्तर को बढ़ाना था ।

इस संस्था ने सेकेण्ड्री शिक्षा के लिए न्यू इंगलिश स्कूल और 1885 ई० में प्री० सेकेण्ड्री शिक्षा के लिए फ्रगुर्यूसन कॉलेज की स्थापना की । न्यू इंगलिश स्कूल के बारे में डेक्कन कॉलेज के तत्कालीन प्रख्यात प्राध्यापक वड्सर्थ ने लिखा है कि–'स्कूल को मिली सफलता पर मुझे सचमुच अचंभा हो रहा है । अंग्रेजी शिक्षा ने हिन्दी समाज को एक नई शक्ति का निर्माण किया है । यह स्कूल इसका एक उदाहरण है, ऐसा मैं मानता हूँ । डॉ० हंटर ने न्यू इंगलिश स्कूल के स्तर को सरकारी हाई स्कूलों की अपेक्षा अधिक ऊंचा मानते हुए यह स्वीकार किया कि न सिर्फ भारत में बल्कि विदेशों से भी स्कूलों की तुलना की जाये तो न्यू इंगलिश स्कूल उत्कृष्ट सिद्ध होगा।'[11] वास्तव में दक्कन एजुकेशन सोसाइटी ने एक बहुत बड़ा आंदोलन स्वतंत्रता के लिए शुरू किया जिसमें धार्मिक और सांस्कृतिक पुनरूत्थान पर जोर दिया गया।[12] इसके अगुवा बाल गंगाधर तिलक थे ।

संदर्भ सूची :–

1. एन० जी० जोंग– लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, तृतीय प्रकाशन, मई 1997, पेज–45
2. ए० के भागवत और जी० पी० प्रधन–लोकमान्य तिलक, जेसिको बुक कंपनी, पेज–108
3. यंग इंडिया, पेज–22, साभार–मैं गांधी बोल रहा हूँ। प्रभात पेपरबैक्स नई दिल्ली
4. सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा– एम० के० गाँधी, नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद, पेज–3
5. टी० पी० पर्वत– बाल गंगाधर तिलक, पेज–511
6. D.V. Tahmankar (1956) Lokamanya Tilak- Father of Imdian Unrest and Maker of Modern India. John Murray- 1st Edition 1956 Retrieved 5 February 2013
7. आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन–आचार्य डॉ० विश्वनाथ प्रसाद वर्मा, प्रकाशक लक्ष्मी नारायण अग्रवाल आगरा, पेज–284
8. Tilak actively Participated in Public affairs- K.S. Bharathi-Page-38 Book- The Political Thought of Lokmanaya Bal Gangadhar Tilak
9. वहीं
10. लोकमान्य तिलक– मूल मराठी बुक लेखक–ग० प्र० प्रधन, अनुवादक–प्रशांत साही, प्रकाशक– नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, पेज–2, संस्करण–2012
11. वहीं
12. D.D. Karve The Deccan Education Society the Jornal of Asian Studies Vol-20 Number-2